श्लोक नं॰ 25

दुन्दुभि प्रातिहार्य

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥ 25॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

गूँज उठी सुर दुन्दुभि नभ में करती दिव्य निनाद।
अरे प्राणियो! करो आत्महित छोड़ो सर्व प्रमाद॥
मोक्षनगर पहुँचाने वाले नाथ पधार रहे।
शिवपुर जाना चाहो तो देरी क्यों लगा रहे॥
शीघ्र चले आओ हे भव्यो! पारसनाथ भजो।
कहाँ मिलेंगे फिर प्रभु दर्शन सर्व विभाव तजो॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 25॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं।

महातपोयुतान् षण्मासादिप्रोषधकारकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं महातपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **भो**जन वसनादिक सब तजकर, आत्म गुफा में ठहर गए।
मुक्ति का संदेशा पाकर, शीघ्र मुक्ति के नगर गए॥ 1345॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **विभो:** कहकर भक्त पुकारे, अपना वैभव दिखला दो।
जिस उपाय से सुखी हुए प्रभु, वह उपाय मुझे बतला दो॥ 1346॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **प्र**थम सवेरे उठकर प्रभु के, गुण का सुमरन किया करो।
गुरु कहते हैं प्रभु सिवा तुम, और न कोई हृदय धरो॥ 1347॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **मा**ता तन को मात्र जन्म दे, प्रभु से जीवन कला मिली।
मुरझाई समकित कलियाँ थीं,चटक-चटक कर खुली खिलीं॥ 1348॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **द**ल अनन्त गुण का ले करके, पहुँचे अष्टम सिद्ध धरा।
अतुलबली अति शूरवीर हो, वीतराग विज्ञान भरा॥ 1349॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **म**नोज्ञ छवि जिनवर की लखकर, मन विभोर हो आता है।
प्रभु समीपता से भवदधि का, शीघ्र छोर दिख जाता है॥ 1350॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **व**र्तमान के तीर्थङ्कर प्रभु, भव्य जीव को तिरा रहे।
अपने को जो भूल गए थे, उन्हें स्वयं से मिला रहे॥ 1351॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. धूल लगी चन्दन जैसी जब, पार्श्वप्रभु ने किया विहार।
यद्यपि स्पर्श किया ना भू का, सुर-नर करते जय-जयकार॥ 1352॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. यत्र-तत्र सर्वत्र भक्तगण, पार्श्वप्रभु के अधिक रहे।
नन्त काल के कषाय रिपु को, ध्यान खड्ग ले क्षीण करे॥ 1353॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. भव भय भंजक नाथ आपका, नाम स्मरण भी सुखकारी।
इसीलिए सब जगत कार्य तज, तव शरणा ली हितकारी॥ 1354॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. जपने से जिनमन्त्र सुनिश्चित, आगत विघ्न विनशते हैं।
सिद्धमहल दिखने लगता है, गुणगण शीघ्र प्रकटते हैं॥ 1355॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. ध्वस्त किए षड्यन्त्र कर्म के, हुए कर्मजेता स्वामी।
धर्म्यध्यान से शुक्लध्यान धर, हुए धर्मनेता नामी॥ 1356॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मेधावी भी श्रद्धा के बिन, अज्ञानी कहलाता है।
हो अल्पज्ञ भले सम्यक्त्वी, सद्ज्ञानी कहलाता है॥ 1357॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नराधिपों से सुराधिपों से, पूजित पारस स्वामी हैं।
इन्द्रिय मन के विषय जीतकर, हुए नन्त सुखधामी हैं॥ 1358॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मायाजाल काट कर्मों का, नाथ आप निष्कर्म हुए।
सर्व जगत का द्वन्द्व तोड़कर, नाथ आप निर्द्वन्द्व हुए॥ 1359॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. गङ्गा से भी अति पावन हैं, सुधा वचन श्री जिनवर के।
दिव्यवचन पीकर होते हैं, अजर-अमर भवि जीवन में॥ 1360॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नित्य निरंजन निराकार प्रभु, अव्यय सुख को प्राप्त हुए।
घाति कर्म का क्षय करके प्रभु, जगत हितङ्कर आप्त हुए॥ 1361॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. निर्व्याकुल होकर जिनवर ने, स्वानुभूति रस खूब पिया।
स्वात्म चतुष्टय गृह में रहकर, शुद्धातम अनुभवन किया॥ 1362॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वृहस्पति भी तव पद में आ, झुक-झुक शीश नवाता है।
बाह्यान्तर वैभव लख करके, विस्मृत ही हो जाता है॥ 1363॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तितली भ्रमरादिक पर्यायें, धारण कर दुख पाया है।
दुर्लभता से मनुज गति पा, भक्त दर्श को आया है॥ 1364॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पुलकित होता भव्यों का मन, पूजन से ना थकता है।
आत्म-शक्तियाँ विकसित होती, भक्त हृदय यह कहता है॥ 1365॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मारीं देश विश्व की सारी, पल में छिन्न-भिन्न होती।
जिनभक्ति ही जनम-जनम की, सर्व कलुषता को धोती॥ 1366॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रीं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रशस्त भावों से जिनवर ने, प्रखर कर्म को जला दिया।
कर्म जनित सारे विकार को, नाथ आपने गला दिया॥ 1367॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तिहुँ लोक तिहुँ काल सम्बन्धी, सब पदार्थ युगपत् जाने।
जो पहचाने नाथ आपको, वह शुद्धातम को जाने॥ 1368॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सार्थक हुआ भक्त का जीवन, जब प्रभु का गुणगान किया।
पाप संक्रमित हुआ पुण्य में, ज्ञान सुधारस आज पिया॥ 1369॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. अथ औ इति नहीं आतम की, आदि अन्त बिन ध्रुव ही है।
अनुभव करते सम्यग्दृष्टि, समझाता जिनश्रुत ही है॥ 1370॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वातावरण सुहाना लगता, जहाँ प्रभु जी रहते हैं।
छोड़ आपको कहीं न जाना, सभी भक्त जन कहते हैं॥ 1371॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. हंता कर्म रिपु के होकर, परम अहिंसक कहलाते।
सर्व शास्त्र के ज्ञाता होकर, नाथ निरक्षर कहलाते॥ 1372॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. एकोऽहं की ध्वनि गूँजती, ऋषि मुनियों के अन्तस् में।
पा रस निजानुभव का फिर वे, पहुँच गए चिन्मय नभ में॥ 1373॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तन्मय होकर करें धर्म तो, निश्चित पाप निर्जरा हो।
पार्श्वप्रभु सम अर्हत् होकर, पाते मोक्ष अक्षया वो॥ 1374॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नितान्त एक अकेले होकर, अनेक गुण से मण्डित हो।
सर्व चराचर जाननहारे, विश्वविज्ञ सत् पण्डित हो॥ 1375॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वेतन तन के लिए चाहिए, चेतन की कुछ चाह नहीं।
पथदर्शक हो पार्श्वप्रभु जी, चलूँ आपकी राह सही॥ 1376॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दर्शनमोहनीय क्षय करके, चारित मोह नशाया है।
मोह राज को परास्त करके, सुख का ध्वज फहराया है॥ 1377॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यहाँ-वहाँ प्रभु ही प्रभु दिखते, क्योंकि हृदय में बसे हुए।
किन्तु नहीं तुमसा बन पाता, क्योंकि कर्म हैं कसे हुए॥ 1378॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिल में तेल भरा ज्यों तन में, चेतन तत्त्व विराज रहा।
अज्ञ जनों को नहीं दिखा वह, विज्ञजनों को दिखा अहा॥ 1379॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. देवालय में जिनदेवा की, मूरत स्थापित रहती है।
सिद्धालय में सिद्धप्रभु की, शुद्धात्मा ही बसती है॥ 1380॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वसुधा की सारी जड़ निधियाँ, कुछ भी काम नहीं आतीं।
दिव्यदेशना सुन जिनवर की, खोई निधियाँ मिल जातीं॥ 1381॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जननी सम प्रभु भक्त जनों के, पल में संकट हरते हो।
जो करता सर्वस्व समर्पण, उसके उर में बसते हो॥ 1382॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जगत्प्रभु को पाकर मुझको, अब क्या पाना शेष रहा।
अन्त समय तक रहे ध्यान बस, आगे मुनि-पद धरूँ महा॥ 1383॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. त्रय रत्नों से धनी जिनेश्वर, मुझ निर्धन पर दया करो।
परम दयालु परम कृपालु, खास दास पर कृपा करो॥ 1384॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. याचक बनकर आया भगवन्, मात्र मोक्ष की वाञ्छा है।
दृष्टि से निज दृष्टा देखूँ, मात्र यही अभिलाषा है॥ 1385॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यज्ञ करूँ स्वात्मोपलब्धि हित, शुक्लध्यान की अग्नि जला।
पाऊँगा मैं लक्ष्य सु-निश्चित, प्रकटे केवलज्ञान कला॥ 1386॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मन्शा मेरी और नहीं कुछ, भक्ति से बस मुक्ति हो।
निजात्म का अवलोकन करने, पाऊँ अनन्त शक्ति को॥ 1387॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ध्येय बनाया शुद्ध स्व पद का, अविरल मुझको चलना है।
बैठ प्रभु-भक्ति नैया में, अपार भवदधि तिरना है॥ 1388॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नरेन्द्र परिजन पुरजन लेकर, प्रभु पूजन को आता है।
वीतराग छवि देख-देख कर, बार-बार सिर नाता है॥ 1389॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दर्शन दो जिनराज आज यह, अँखियाँ मेरी प्यासी हैं।
जग पदार्थ नहीं लखना चाहें, जिन छवि की अभिलाषी हैं॥ 1390॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. उन्नत लोक शिखर पर राजित, पार्श्वनाथ त्रिभुवन राजा।
हे चेतन अब कहीं न जा तू, प्रभु शरण में ही आ जा॥ 1391॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भिगा दिया मन को भक्ति में, भक्त मुक्त वह होता है।
अल्प काल में नन्त शक्ति पा, कर्म मलों को धोता है॥ 1392॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नय प्रमाण से तत्त्व समझ कर, स्वातम में ही रमना है।
तजकर यह संसार वास को, सिद्धालय में रहना है॥ 1393॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शुभः पुण्य का अशुभ पाप का, कारण प्रभु ने बतलाया।
अशुभ भाव तज शुभ भावों से, शुद्ध भाव पाने आया॥ 1394॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सुरदल प्रभु के समवसरण में, दिव्यध्वनि सुनने आये।
पार्श्वप्रभु के वचनामृत सुन, समकित घन[1] उर में छाये॥ 1395॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रवि से दिन में ही प्रकाश हो, अन्तर तम नहीं मिटता है।
प्रभु सूरज की दिव्य कान्ति से, दिव्य उजाला मिलता है॥ 1396॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दुर्भावों के ही कारण मैं, दुःख अनेक उठाता हूँ।
दुख का कारण समझ रहा पर, छोड़ नहीं क्यों पाता हूँ॥ 1397॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. बिन्दु मात्र है भक्ति मेरी, आप गुणों के सागर हो।
बुझा-बुझा सा दीप रहा मैं, जिनवर ज्ञान दिवाकर हो॥ 1398॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भिन्न-भिन्न अस्तित्व सर्व ही, द्रव्यों का जो जान रहे।
जैसा कहा प्रभु ने वैसा, सम्यक्त्वी ही मान रहे॥ 1399॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रास्ते जग के और मोक्ष के, भिन्न-भिन्न बतलाए हैं।
जग के आस्रव बन्ध मोक्ष के संवर निर्जर माने हैं॥ 1400॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

नभ में सुरगण दुन्दुभि बाजे, बजा-बजा कर जगा रहे।
भव्य जीव प्रभु प्रवचन सुनकर, मोह नींद को भगा रहे॥
पार्श्वप्रभु की दिव्यदेशना, अनर्घ्य पद दातारी है।
अर्घ्य चढ़ाऊँ श्री चरणों में, जो शिवसुख करतारी हैं॥25॥

ॐ ह्रीं श्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. बादल

श्लोक नं॰ 26

छत्रत्रय प्रातिहार्य

उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोल्ल-सितातपत्र
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥ 26॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

त्रिभुवन को कर दिया प्रकाशित पूर्णज्ञान द्वारा।
अतः चन्द्र अधिकार विहीन हो आया बेचारा॥
तीन छत्र का वेष धार मानो चन्दा आया।
छत्रों की लड़ियों में सङ्ग तारागण को लाया॥
तीन लोक के नाथ शरण में आए शशि तारे।
पूर्ण प्रतापी प्रभु को लखकर जय-जय उच्चारें॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 26॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं।

त्रिकालयोगिनो घोर, तपस्यर्पितमानसान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 26॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

पद्धरि छन्द

1. उद्बोधन प्रभु का सुखकार, सुनकर श्रोता हो भवपार।
सुनूँ वचन मैं भी हितकार, तिर जाऊँ भवसिन्धु अपार॥ 1401॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. उद्योगी आरम्भ विरोध, संकल्पी हिंसा को छोड़।
गुरु कहें हिंसा कर दूर, भाव अहिंसक हो भरपूर॥ 1402॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तिष्ठ-तिष्ठ प्रभु पार्श्व जिनेश, मेटो भव-भव के संक्लेश।
कर्म सहित मम आत्मप्रदेश, शुद्ध कीजिए हे परमेश॥ 1403॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तेजस्वी जिन छवि अवलोक, मिट जाता है सारा शोक।
जिनदर्शन अति दुर्लभ जान, अतः भाव से भज भगवान॥ 1404॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सत्त्वेषु मैत्री हो जाय, गुणीजन देख हृदय पुलकाय।
दुखी देख हो करुणा भाव, प्रकटाऊँ मैं आत्म स्वभाव॥ 1405॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भटका नन्त काल से नाथ, मिला न मुझको तुमसा साथ।
जागा अब मेरा सौभाग्य, पा जाऊँ शिवपुर का राज्य॥ 1406॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वर्ते मुझमें परमानन्द, यही अरज है पार्श्व जिनन्द।
मैं हूँ बाल अबोध अधीर, नाथ आप रहते गम्भीर॥ 1407॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तारक भव्यजनों के आप, मिटा रहे भव-भव के ताप।
अब तक थे निज से अनजान, उन्हें करा दी निज पहचान॥ 1408॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भुवनत्रय के भूषण आप, सुर नर अहिपति नमते माथ।
करें प्रभु पर सब विश्वास, पूर्ण करेंगे मन अभिलाष॥ 1409॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. वत्स जोड़ता दोनों हाथ, गुण गाता है दिन औ रात।
जो होते हैं सच्चे जैन, प्रभु दर्शन कर हरषे नैन॥ 1410॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नेह भाव से होता बन्ध, होय नैन पर रहता अन्ध।
नेह गेह दुख कारण जान, मुक्त हुए इससे भगवान॥ 1411॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शीलेषु हैं अग्र जिनेश, मुनिवर कहते हैं शीलेश।
मनहारी छविधारी नाथ, सब ऋषि मुनियों के सरताज॥ 1412॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नायक समवसरण के आप, नर-सुर अहिपति जोड़े हाथ।
जग से न्यारी प्रभु की शान, जय-जय पार्श्वनाथ भगवान॥ 1413॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. थक जाते जब मेरे नैन, जिनछवि लखकर मिलता चैन।
कट जाते हैं कर्म कठोर, आती जीवन की शुभ भोर॥ 1414॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. तामस वृत्ति क्षय हो जाय, जब जिनवर की सन्निधि पाय।
राजस वृत्ति का कर त्याग, सात्विक बन धारे वैराग्य॥ 1415॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तिमिरान्तक हे पार्श्व जिनेश, मेटो राग-द्वेष द्वय क्लेश।
तजकर मैं सारा संसार, पा जाऊँ मैं मुक्ती द्वार॥ 1416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. विनय भाव से कटते कर्म, प्रकटित होता आतम धर्म।
विनम्र होकर जोड़ूँ हाथ, जिनवर करिए मुझे सनाथ॥ 1417॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोड़ो नहीं किसी का मन, भगवन के हैं दिव्य-वचन।
कहते हैं ऐसा गुरुदेव, गुरु-पद में वन्दन अतएव॥ 1418॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विघ्न विनाशक पारसनाथ, मोक्षपुरी तक दीजे साथ।
धरूँ दिगम्बर नग्न सु-भेष, पा जाऊँ सिद्धालय देश॥ 1419॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. धुन लागी प्रभु आऊँ समीप, एकमात्र प्रभु सच्चे मीत।
मुझे बुला लो अपने पास, या मन मन्दिर करिए वास॥ 1420॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रक्षा करिए मैं हूँ बाल, अति धीमी है मेरी चाल।
पकड़ो भगवन् मेरी बाँह, शीघ्र चलूँ मैं मुक्ति राह॥ 1421॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गम्यं नहीं अज्ञ के आप, कैसे होवे नाथ मिलाप।
प्रभु दर्शन को हृदय अधीर, बहता है नयनों से नीर॥ 1422॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विदेह पद ही मेरा लक्ष्य, साध्य प्राप्ति में मन हो दक्ष।
चित्त रहे मम नित्य अकंप, यही प्रार्थना पार्श्व जिनन्द॥ 1423॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. हने प्रभु ने आठों कर्म, प्राप्त किया अक्षय शिव शर्म।
मुझ बालक की रखिए लाज, डगमग नैया करिए पार॥ 1424॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तारे नभ में रहे अनेक, लेकिन चाँद द्युतिमय एक।
भक्त जगत में रहें अनेक, मेरे पार्श्वप्रभु हैं एक॥ 1425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. बोधि समाधि देना नाथ, मात्र सिद्धि की है अभिलाष।
संसारी सब रखते स्वार्थ, मिलता है प्रभु से परमार्थ॥ 1426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कायोत्सर्ग दशा में लीन, होकर किए कर्म सब क्षीण।
धन्य-धन्य प्रभु का पुरुषार्थ, पाया अनुपम सौख्य यथार्थ॥ 1427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नरः सुरः सब पूज रचाय, नाच-नाच कर ताल बजाय।
सुमन कल्पतरु के ले आय, पार्श्व चरण में शीघ्र चढ़ाय॥ 1428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. मुक्तीफल को पाकर ईश, अजर-अमर हो गए मुनीश।
एक सिद्ध में अनगिन सिद्ध, पार्श्वप्रभु जी हुए प्रसिद्ध॥ 1429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तारे अनगिन प्रभु ने भव्य, प्राप्त किया है अव्यय सौख्य।
अब है प्रभुवर मेरी बार, मेरा भी करिए उद्धार॥ 1430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कथा भ्रमण की बहुत विशाल, मेरा भी काटो भव-जाल।
भाव भक्ति से पूजूँ नाथ, श्री चरणों में रख लूँ माथ॥ 1431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लाभान्वित होते हैं भक्त, दिव्यदेशना सुनकर तृप्त।
जब प्रभु दर्शन हो साक्षात्, रात अंधेरी लगी प्रभात॥ 1432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परमेष्ठी पावन पद धार, प्राप्त किया जीवन का सार।
कब होवे मेरा कल्याण, प्रभु सम पाऊँ मैं निर्वाण॥ 1433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कष्ट जगत का सहा न जाय, अतः भव्य जन तव दर आय।
पार्श्वप्रभु की छवि अभिराम, दर्शन कर मिलता शिवधाम॥ 1434॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिखना बड़ा सरल है काम, लखना है अति दुर्लभ काम।
मन वच तन तीनों सम्हाल, नमूँ झुकाकर सविनय भाल॥ 1435॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तोड़े सारे जग के बन्ध, हुए आप सिद्धि के कन्त।
अष्ट कर्म मल करिए नाश, नम्र निवेदन मम जिनराज॥ 1436॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वल्लरियाँ झूमें औ गाय, प्रभु विहार लख जन हर्षाय।
प्रभु से मिलता ज्ञान प्रकाश, होता पाप कर्म का नाश॥ 1437॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिद्धशिला पर ठहरे आप, शाश्वत काल करें वहँ वास।
मुझे दीजिए ऐसा दान, निज आतम का होवे भान॥ 1438॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. ताले मोह कर्म के तोड़, जन परिजन से मुख को मोड़।
पार्श्वप्रभु जी तप को धार, पहुँचे मोक्षमहल के द्वार॥ 1439॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तव सुमरन से आतम शान्त, मिट जाता अन्तर का ध्वान्त।
मैं भी भरूँ आत्म गुणकोष, नाश करूँ अब सारे दोष॥ 1440॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पश्चाताप मुझे दिन-रात, जनम-जनम में करके पाप।
राह न कुछ भी सूझे नाथ, करूँ आपकी तब मैं याद॥ 1441॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रय पापों से आप विमुक्त, अनन्त गुण-गण से संयुक्त।
गुण की गणना करी न जाय, महिमा वच से कही न जाय॥ 1442॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. व्याधि जन्मादिक त्रय नाश, हुए आप नाथों के नाथ।
जिन समीप आ शान्ति पाय, भव-भव की भ्रान्ति टल जाय॥ 1443॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. जात्यन्तर प्रकृति[1] से मुक्त, जाति-पाति से हुए विमुक्त।
देह रहित वैदेही नाथ, सिद्धिनगर में करते राज॥ 1444॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्रिकालदर्शी पार्श्व जिनाय, मोक्षनगर की डगर दिखाय।
जो जिनवर की पूज रचाय,जीव सातिशय पुण्य कमाय॥ 1445॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. धारण किया प्रभु का वेष, दोष रहे ना अब लवलेश।
पार्श्वप्रभु जी कीर्तिमान, अनन्त अक्षय शक्तीमान॥ 1446॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धृति आदिक गुण समूह धार, प्राप्त किया नरभव का सार।
स्व-पर तत्त्व का कर कल्याण, अतः आप ही परम पुमान्॥ 1447॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तमस विनाशक प्रभु का रूप, सकल ज्ञेय ज्ञायक जिन भूप।
मुक्ती के साधन जिनराज, लोक अग्र राजे सरताज॥ 1448॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तपोनिष्ठ श्री पार्श्व जिनाय,अडिग मेरु सम अचल रहाय।
निर्विकल्प प्रभु हैं अविकार, नमन करूँ मैं बारम्बार॥ 1449॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तनुर्मुक्त श्री पार्श्व जिनेश, तुम्हें नमें सुर इन्द्र खगेश।
मुझ पर परम कृपा की नाथ, कर पाता हूँ भक्ति आज॥ 1450॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. सम्यक्त्वमिथ्यात्व प्रकृति (मिश्रप्रकृति)

51. ध्रुवगामी जिनवर की चाल, पाया मोक्षमहल सु-विशाल।
जननी से भी अति महान, अनन्त उपकारी भगवान॥ 1451॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वसु प्रहर मैं जप लूँ नाम, नाम स्मरण से हो सब काम।
मुझको है प्रभु पर विश्वास, पूरी होगी मम अभिलाष॥ 1452॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मनुजोत्तम हो पार्श्व जिनेश, तीर्थङ्कर पद पाय विशेष।
ज्ञानधनी कुछ दे दो दान, हो अज्ञान अन्ध अवसान॥ 1453॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अभ्युदय की कुछ ना चाह, पाऊँ बस अपवर्ग की राह।
सौंप दिया मन तुमको नाथ, तव पद आज नवाऊँ माथ॥ 1454॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जपे नाम जो भक्ति युक्त, हो वह सर्व विकार विमुक्त।
विकल्प का हो जाता अन्त, शान्त अडिग हो जाए चित्त॥ 1455॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. प्रातः उठकर करूँ प्रणाम, त्रिविध योग से जप लूँ नाम।
करूँ शान्त मन से प्रभु ध्यान, बना रहे नित सम्यक्ज्ञान ॥ 1456॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

त्रिभुवन में कर दिया प्रकाश, शशि की अब कुछ भी ना आश।
अतः छत्र त्रय धारा वेष, तारे सम लड़ियों को देख॥
नाथ आज मम मन हर्षाय, श्री चरणों में अर्घ्य चढ़ाय।
छत्र छाँव नित पाऊँ जिनेश, पार्श्वप्रभु मेरे पूर्णेश॥26॥

ॐ ह्रीं श्रीं छत्रत्रयशोभिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 27

समवसरण का वर्णन

स्वेन प्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन
कान्ति - प्रताप - यशसामिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥ 27॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

समवसरण में मणि सुवर्ण चाँदी के कोट रहे।
जिनवर के चउ ओर कोट त्रय अतिशय शोभ रहे॥
प्रभु की कान्ति प्रताप यश के समूह से लगते।
सर्व ओर से आकर तीनों प्रभु-पद में रहते॥
अतिशयकारी तीर्थङ्कर का वैभव है भारी।
असंख्यात भव्यों को भगवन् लगते हितकारी॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 27॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं।

ऋषीन् घोरगुणान् शक्तान्, परीषहविनिर्जये।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. स्वेदादिक अठरह दोषों से मुक्त पार्श्व स्वामी।
अष्ट द्रव्य ले भाव सहित मैं पूजूँ जगनामी॥ 1457॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नमता है भगवन् को जो भी मन-वच-काया से।
वह होता है दूर शीघ्र ही भय मद माया से॥ 1458॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. प्रशस्त भावों से प्रभु की जो भक्ति करता है।
वह क्षय करके घाति-अघाति मुक्ति वरता है॥ 1459॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. पूनम का चन्दा भी प्रभु आगे शर्माता है।
दिव्य कान्ति लख प्रभुवर की सूरज छिप जाता है॥ 1460॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रिपु मित्रता नहीं किसी से राग-द्वेष से दूर।
पार्श्वप्रभु जी तीर्थङ्कर हैं वीतराग भरपूर॥ 1461॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तत्पर रहता भक्त नित्य प्रभु की भक्ति करने।
बहते रहते सदा हृदय में ज्ञान ध्यान झरने॥ 1462॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. जनसैलाब उमड़ आता जब प्रभु विहार करते।
पुलकित हो आबाल वृद्ध जिनवर पद में नमते॥ 1463॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. जगत्प्रकाशक ज्ञान आपका अपूर्व सूरज-सा।
पार्श्वप्रभु जी का मुख मण्डल मेरे हृदय बसा॥ 1464॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. त्रय शल्यों से रहित व्रती जब प्रभु को ध्याते हैं।
अपने मन मन्दिर में भगवन् तुमको पाते हैं॥ 1465॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यतिपति गणधर ऋषि भी आकर प्रभु के गुण गाते।
मनहर मूरत देख आपकी आत्मिक सुख पाते॥ 1466॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पिण्ड आहार वर्गणाओं का तन यह नश्वर है।
पार्श्वप्रभु जी ज्ञान शरीरी नित अविनश्वर हैं॥ 1467॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पिण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मंडित नन्त गुणों से स्वामी पार्श्वनाथ प्यारे।
तीन योग से झुकते हैं प्रभु को भविजन सारे॥ 1468॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तेजपुंज साँवलिया प्रभु श्री पार्श्वनाथ स्वामी।
घोर-घोर उपसर्ग सहन कर हुए जगतनामी॥ 1469॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नरभव सार्थक किया आपने सिद्धालय पाकर।
बार-बार मैं नमूँ आपको हे गुण रत्नाकर॥ 1470॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कान्ति परमौदारिक तन की सबका मन हरती।
श्रद्धा से जो निरखे उनको सिद्धि स्वयं वरती॥ 1471॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तिष्ठ-तिष्ठ कहकर प्रभु जी को भक्त बुलाते हैं।
अशुभ भाव तज शुभ में निज उपयोग रमाते हैं॥ 1472॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. प्रखर ज्ञान सूरज उग आया प्रभु चेतना में।
पूर्णज्ञान पाऊँ प्रभुवर से करूँ प्रार्थना मैं॥ 1473॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तारागण ज्यों चन्दा को घेरे ही रहते हैं।
प्रभु-पद में त्यों ऋषि मुनि आकर निज में रमते हैं॥ 1474॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. परमाह्लाद मुझे होता जब प्रभु विधान करता।
गाते-गाते तन नहीं थकता मन पाता साता॥ 1475॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यह-वह करते समय बिताया किया नहीं पुरुषार्थ।
शुद्धातम की धुन नहीं लागी साधा ना परमार्थ॥ 1476॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. शरणागत तव शरण प्राप्त कर पुलकित होते हैं।
नाथ आपको निरख-निरख कर अघमल धोते हैं॥ 1477॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सावन झूम-झूम कर बरसा ऐसा लगता है।
नाथ आपके दर पर मन को अच्छा लगता है॥ 1478॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मिले मुझे प्रत्यक्ष दर्श प्रभु यही अरज करता।
क्योंकि सुना है प्रभु दर्श से कर्म बन्ध कटता॥ 1479॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वन पर्वत मन्दिर शास्त्रों में प्रभुवर नहीं मिले।
श्रद्धा से खोजा मन मन्दिर में प्रभु आप मिले॥ 1480॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सञ्चय करके जड़ धन फिर भी साथ न जाएगा।
आया खाली हाथ अकेला खाली जाएगा॥ 1481॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सञ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. चमक आपके श्यामल तन की वरनी ना जाए।
गगनपति रवि भी तुमको लखकर शरमा जाए॥ 1482॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. ध्येय बनाकर शुद्धातम का सिद्ध हुए स्वामी।
मुझे समा लो निज चरणों में हे अन्तर्यामी॥ 1483॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नव-प्रभात-सी लगी आज जब प्रभु का दर्श हुआ।
शब्दों से मैं बता न सकता कितना हर्ष हुआ॥ 1484॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. माता-पिता सगे सम्बन्धी तन के साथी हैं।
आत्म हितैषी नाथ आप दीपक हम बाती है॥ 1485॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. अणिमादिक ऋद्धिधर सुर भी शीश नवाते हैं।
सुर-नर और अहिपति के भी ईश कहाते हैं॥ 1486॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. शक्य नहीं है पार्श्वप्रभु के अनन्त गुण गाना।
इसीलिए प्रभु नाम जपूँगा भक्तों ने ठाना॥ 1487॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हे संकटहर नाथ आपसे यही प्रार्थना है।
भवाताप से मुझे बचा लो यह ही कहना है॥ 1488॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मदनविजेता बाल ब्रह्मचारी प्रभु को वन्दन।
मिटाइए मुझ बाल भक्त के भव-भव का क्रन्दन॥ 1489॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रत्न जड़ित सिंहासन पर प्रभु आप राजते हैं।
देख आपको भक्तों के मन मोर नाचते हैं॥ 1490॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. जहर समान विषय सुख प्रभु ने पल में छोड़ दिए।
कर्म और नोकर्मों के सब बन्धन तोड़ लिए॥ 1491॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तरस रहे द्वय नयन हमारे प्रभु के दर्शन को।
कब आओगे पावन करने प्रभु मेरे मन को॥ 1492॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रभु प्रभाव से सुषुप्त प्राणी जागृत हो जाता।
पतझड़ भी प्रभु की सन्निधि से सावन हो जाता॥ 1493॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विपुल ऋजु मनपर्यय ज्ञानी मुनिवर को वन्दूँ।
पार्श्वप्रभु के समवसरण के मुनिगण अभिनन्दूँ॥ 1494॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. निर्मद होकर सहजानन्दी प्रभु ने शिव पाया।
सुखी हुआ वह प्राणी जो भी जिनवर दर आया॥ 1495॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मिला नहीं अब तक मुझको सुख इस झूठे जग में।
इसीलिए मैं सच्चे मन से आया जिन-पद में॥ 1496॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तेरा सो इक आत्म तत्त्व है प्रभुवर कहते हैं।
जो प्रभुवर की आज्ञा माने सिद्धि वरते हैं॥ 1497॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नर-नारी प्रभु का विधान कर पाप नाश करते।
प्रभु से दूर भले हो पर मन से समीप रहते॥ 1498॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सारभूत है नरभव में तीर्थङ्कर की भक्ती।
मन से जिनने की भक्ति उनने पाई मुक्ती॥ 1499॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. लघुता से ही प्रभुता मिलती आगम कहता है।
विनयवान ही अति शीघ्र शुद्धातम लखता है॥ 1500॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्रय लोकों में सारभूत इक वीतरागता है।
वैरागी ही वीतरागमय भाव धारता है॥ 1501॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. ध्येय प्राप्त ना हो जब तक मैं ध्यान धरूँ स्वामी।
पार्श्वप्रभु की सन्निधि पाकर बनूँ मोक्षगामी॥ 1502॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. णमो अरिहंताणं कहकर शीश झुकाते हैं।
मन-वच-काया से हम भगवन् भक्ति रचाते हैं॥ 1503॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भव-कानन में भटक गया हूँ राह नहीं सूझे।
पहुँचेंगे वे लक्ष्य धरा पर जो प्रभु को पूजे॥ 1504॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गगन चूमता शिखर यहाँ सम्मेदगिरि पर है।
पार्श्वप्रभु की मोक्षथली पर आते सुर-नर हैं॥ 1505॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वन्य जीव भी गिरि शिखर के शान्त भाव धारी।
भविष्य में सब जीव यहाँ के मुक्ती अधिकारी॥ 1506॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. छिन्न-भिन्न हो विघ्न कष्ट सब प्रभु के सुमरन से।
जो भी भजते भक्त सदा ही अन्तर आतम से॥ 1507॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. अभिव्यक्ति श्रद्धा भावों की कर ना पाता हूँ।
जितनी भक्ति गहराती मैं पाता साता हूँ॥ 1508॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तोड़ जगत से नाता भगवन् तुमसे जोड़ा है।
जितना गुण गाऊँ प्रभुवर का उतना थोड़ा है॥ 1509॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. विकार से हो मुक्त आप अविकार कहाते हो।
इसीलिए तो ऋषि मुनियों के मन को भाते हो॥ 1510॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाषित हैं अनुयोग चार प्रभु दिव्यदेशना में।
अरज करें सब भक्त आइए हृदय-अंगना में॥ 1511॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. सिद्धालय में आप विराजित सदा शाश्वता हैं।
मुझको भी प्रभु पूजन से पाना भगवत्ता है॥ 1512॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

समवसरण में तीन कोट मणि सुवर्ण चाँदी के।
चढ़ा रहा पूर्णार्घ्य देख वैभव जिनस्वामी के॥27॥

ॐ ह्रीं श्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 28

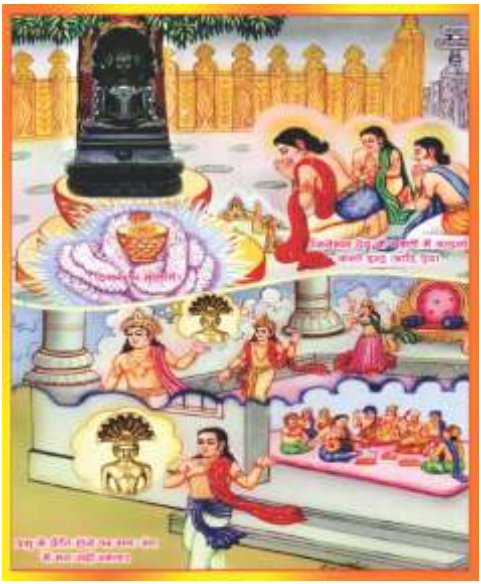

भामण्डल प्रातिहार्य

दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव॥ 28॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

रत्न मुकुटधारी सुरगण जब प्रभु पद नमन करें।
दिव्यमाल मुकुटों को तजकर प्रभु पद वास करें॥
नाथ आपका श्रेष्ठ समागम सु-मनस को भाए।
ज्ञानीजन हे नाथ तुम्हें तज कहो कहाँ जाए॥
अनन्त गुणमय रत्न जड़ित हैं मुकुट आपके पास।
दिव्यगुणों की माला पाने करूँ चरण तव वास॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 28॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं।

कर्मारिघातनेऽत्यन्तोद्यतान् घोरपराक्रमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 28॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरपराक्रमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

घत्ता

1. दिन और रात में, झुका माथ मैं, पार्श्वप्रभु को नमन करूँ।
   मम भाव यही है, मोक्ष मही में, नन्त काल सुख रमण करूँ॥ 1513॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. व्यन्तर आदिक सुर, पाते हैं सुख, प्रभुवर की भक्ति करके।
   मैं भी प्रभु ध्याऊँ, निज सुख पाऊँ, शाश्वत शिव सिद्धि वर के॥ 1514॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. स्रष्टा कहलाते, हृदय समाते, पार्श्वनाथ को वन्दन है।
   प्रभु आप सहायी, हो अतिशायी, हर लेते सब क्रन्दन हैं॥ 1515॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. जो दर्शन पाते, ध्यान लगाते, उनके पाप सभी नशते।
   संसार छोड़कर, कर्म क्षयङ्कर, सिद्धनगर में वे बसते॥ 1516॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. जित मोह जिनन्दा, वामानन्दा, मुक्ती के आधार तुम्हीं।
   ऋषि-मुनि सुर आते, शीश नवाते, भव्यों के हितकार तुम्हीं॥ 1517॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. नहीं जग में सुख है, दुख ही दुख है, शिवसुख पथ बतला देना।
   मम अरजी सुनिए, भव दुख हरिए, नाथ मुझे अपना लेना॥ 1518॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. नजरों में तुम हो, मन में तुम हो, एक बार प्रभु दर्शन दो।
   मुनि कुमुदचन्द्र सम, बन जाएँ हम, आए हैं प्रभु पूजन को॥ 1519॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. श्रीमत् तुम ही हो, धी धर तुम हो, सर्व गुणों से संयुत हो।
नित ज्ञानमहल में, रहकर निज में, परमानन्दी सुख युत हो॥ 1520॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. त्रिभुवनदर्शी हो, निज स्पर्शी हो, ज्ञान वेदि पर बसते हो।
प्रभु अनन्त गुणधर, सिद्धालय पर, सदा विराजे रहते हो॥ 1521॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दयनीय दशा है, इक आशा है, दुख से नाथ बचा लोगे।
मैं किसे बताऊँ, व्यथा सुनाऊँ, अरज भक्त की सुन लोगे॥ 1522॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. शान्ति के दाता, भविजन त्राता, शरण आपकी आऊँ मैं।
जिन पूजन करके, विधान रच के, प्रभु गुण महिमा गाऊँ मैं॥ 1523॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. धिक्-धिक् संसारा, जगत असारा, कोई यहाँ ना अपना है।
स्वारथ के रिश्ते, झूठे नाते, जो दिखता सब सपना है॥ 1524॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पाना है ना कुछ, तज जग के सुख, परमानन्दी होना है।
निज सुख है निज में, कुछ ना पर में, निज स्वभाव में खोना है॥ 1525॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नायक ना बनना, ज्ञायक रहना, आत्मसाधना करना है।
अन्तर धर समता, तजकर ममता, प्रभु के पथ पर चलना है॥ 1526॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मुत्ती[1] पथगामी, स्वातम ज्ञानी, शुद्धातम में मगन रहे।
मम अरज यही है, भाव यही है, सिद्धदशा की लगन रहे॥ 1527॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. सृष्टि के दृष्टा, भव दुखहर्त्ता, बाह्यान्तर लक्ष्मीयुत हैं।
वन्दें नर-नारी, जय त्रिपुरारि, पार्श्वप्रभु सुख संयुत हैं॥ 1528॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. मुक्ति

17. पूज्यों से पूजित, तिहुँजग वन्दित, भक्त आपको चाह रहे।
तव छवि निहार कर, साम्य धारकर, मोक्षमार्ग को साध रहे॥ 1529॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रत्नत्रय धारी, जग हितकारी, कर्म गिरि को चूर किए।
जो परम भक्त हैं, शरणागत हैं, उनके विधिमल दूर किए॥ 1530॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नरकों में जाकर, कष्ट भोगकर, दुष्कर्मों का बन्ध किया।
अब शरण प्राप्तकर, जिनगुण गाकर, पाप कर्म को मन्द किया॥ 1531॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रमणीय जिनालय, दर्शन सुखमय, सिद्धालय तक पहुँचाते।
जो मन्दिर आते, प्रभु को ध्याते, उनके बन्धन कट जाते॥ 1532॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. चिन्मूरत धारी, शिव सुखकारी, परम यशस्वी हो स्वामी।
हो सौख्य स्वरूपी, गुण चिद्रूपी, अर्घ्य चढ़ाऊँ जगनामी॥ 1533॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तारक भविजन के, भक्त जनों के, सारे विघ्न विनाशक हो।
अज्ञान अंधेरा, तुम्हें पुकारा, आतम ज्ञान प्रकाशक हो॥ 1534॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नत नयन हमारे, हृदय पुकारे, मुझको भी भवदधि तिरना।
प्रभु करुणासागर, दया सरोवर, मुझ पर भी करुणा करना॥ 1535॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिछले कर्मों के, दुखमय फल से, कष्ट उठाये बहु स्वामी।
जिनगुण अनुरागी, पदानुगामी, बन जाऊँ अब ध्रुवधामी॥ 1536॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मौका यह पाया, नरभव काया, सफल करूँ मम भाव यही।
भव भ्रमण नशाऊँ, स्वातम ध्याऊँ, पाऊँ अष्टम मोक्ष मही॥ 1537॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. लिखना भी चाहूँ, लिख ना पाऊँ, नाथ नन्त गुणधारी हो।
वसु कर्म नशाकर, ज्ञान प्रभाकर, भविजन को शिवकारी हो॥ 1538॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बन्धन का क्षयकर, संवर निर्जर, करके मोक्ष तत्त्व पाया।
प्रभु ज्ञान सु-दाता, जग विख्याता, महिमा सुन दर पर आया॥ 1539॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. धान्यादिक वृद्धि, प्रभु की सन्निधि, पाकर तरु फल फूल रहे।
प्रभु के विहार में, चरण पाद में, लता गुल्म सब झूल रहे॥ 1540॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पाताल लोक से, अहिपति आके, प्रभु की पूजा करता है।
यह भक्त शरण आ, जिन दर्शन पा, अर्घ्य समर्पण करता है॥ 1541॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. दौलत को पाकर, क्यों इतराकर, नश्वर का मद करता है।
क्षणभङ्गुर माया, मैली काया, इसको भी तो तजना है॥ 1542॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. श्रद्धा से आया, द्रव्य सजाया, अर्चन करने मैं आया।
विधि बन्धन नाशो, ज्ञान प्रकाशो, सिद्धनगर पाने आया॥ 1543॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अत्यन्त मनोहर, ज्ञान सरोवर, नाथ आपका आतम है।
चउमुख छवि दिखती, मुनि मन हरती, ऐसे पार्श्व जिनोत्तम हैं॥ 1544॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तिर गए भवार्णव, उत्तम मानव, जिनने प्रभु का ध्यान किया।
शुद्धात्म ध्यान धर, कर्म नाशकर, सिद्धालय को प्राप्त किया॥ 1545॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. भव-भव के दुखड़े, प्रभु ने मेटे, मैं भी अघ धोने आया।
प्रभु महिमा सुनकर, सब दर तजकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं लाया॥ 1546॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वन्दन जो करता, बन्धन कटता, कहती माँ जिनवाणी है।
जिन नाम जाप कर, अघ से बचकर, बन जाता शिवगामी है॥ 1547॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तोड़े सब नाते, प्रभु गुण गाते, वे ही निज में रमते हैं।
संसार छोड़कर, स्वातम लखकर, सिद्धमहल में रहते हैं॥ 1548॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यम प्रभु से डरता, पास न आता, मृत्युञ्जय जिन कहलाते।
जो श्रद्धा रखते, संयम धरते, मोक्ष सुरक्षित पहुँचाते॥ 1549॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिन-रात जपूँ मैं, चरण नमूँ मैं, दर्शन कर सुख पाता हूँ।
अति मधुर स्वरों में, आप पदों में, सविनय अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥ 1550॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वाणी हितकारी, जग उपकारी, नाथ आपका क्या कहना।
मम यही कामना, हृदय भावना, आप चरण में ही रहना॥ 1551॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. परमार्थ जगाया, तत्त्व बताया, अनन्त उपकारी स्वामी।
मैं प्रवचन सुनकर, विभाव तजकर, बन जाऊँ कब शिवगामी॥ 1552॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रति-अरति रहित हो, सौख्य सहित हो, स्वात्म धाम में बसते हो।
परद्रव्य विरक्ति, निजानुभूति, गुण से सुन्दर लगते हो॥ 1553॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रय शल्य विमुक्तं, वसु गुण युक्तं, पार्श्वनाथ गणनायक हैं।
प्रभु तन तेजोमय, श्याम वर्णमय, लोकालोक सु-ज्ञायक हैं॥ 1554॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वत् समीप आके, पूज रचा के, लगा आज कुछ कार्य किया।
मन में हर्षाकर, छवि निहार कर, अन्तर्मन में सौख्य लिया॥ 1555॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. सर्वस्व समर्पण, करके भविजन, अपलक तुम्हें निहार रहे।
जो डरे हुए थे, दुख सहते थे, उन्हें दुखों से तार रहे॥ 1556॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गङ्गा सम पावन, छवि मनभावन, वीतरागता झलक रही।
जिन-दर्शन पाकर, मन हर्षा कर, आत्म मुक्ती को तड़प रही॥ 1557॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरे जिनरायी, हो अतिशायि, सर्व जगत में अनुपम हो।
मम हृदय समाओ, कभी न जाओ, नाथ आप मेरे धन हो॥ 1558॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सुमरन मैं करता, मिलती साता, प्रभु-चरण में नमता हूँ।
जिनवाणी मानूँ, निज को जानूँ, अतः अर्चना करता हूँ॥ 1559॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मनहर छवि वाले, तारणहारे, अव्यय सुख के धारक हो।
मैं जिनगुण गाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ, भविजन के दुखहारक हो॥ 1560॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नयनोत्सव आया, दर्शन पाया, जिनमूरत लख हर्षाया।
नुपुरादिक बाजे, साज सजा के, भक्त अर्चना को आया॥ 1561॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सोऽहं जपना है, शिव पाना है, यही नाथ उद्देश्य रहा।
शुद्धातम ध्याऊँ, गुण प्रकटाऊँ, शुद्ध सिद्धपद ध्येय रहा॥ 1562॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नश्वर जग सारा, नहीं सहारा, मात्र आसरा जिनवर का।
सबने ठुकराया, स्वार्थ समाया, शरणा पाया प्रभु दर का ॥ 1563॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रस रूप रहित हूँ, ज्ञान सहित हूँ, ऐसा प्रभु ने समझाया।
प्रभु की ही मानूँ, निज को जानूँ, यही लक्ष्य लेकर आया॥ 1564॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मन्दार सुन्दरम्, नमेरु पुष्पं, दिव्य सुगन्धित बरस रहे।
शुभ गन्धकुटी पर, पार्श्व जिनेश्वर, वीतरागमय राज रहे॥ 1565॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तप की अग्नि में, निज सन्निधि में, प्रभु ने विधिमल नशा दिया।
प्रभु शर्ण में आकर, पूज रचाकर, पुण्य सातिशय कमा लिया॥ 1566॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. एकाग्रचित हो, मन पवित्र हो, तभी अर्चना सार्थक है।
ऋषिवर भी ध्याते, जिनगुण गाते, बन जाते शिव साधक वे॥ 1567॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वचनामृत सुनकर, स्व-पर ज्ञान कर, शुद्धातम प्रकटा लेते।
जो प्रभु को भजते, निज में रमते, मानुष जन्म सफल करते॥ 1568॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सुर नमन करे जब, मुकुटों को तज, माला प्रभु-पद वास करे।
प्रभु श्रेष्ठ समागम, यही जान हम, चरणों में पूर्णार्घ्य धरें॥28॥

ॐ ह्रीं श्रीं भक्तजनोन्नतिकराय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।